A.B.M. College, Golmuri
Jamshedpur. 2nd year INTER

Date ____
Page ____

Hindi Core 'A'

हिन्दी, कोर ; आरोह - 2

काव्य - खण्ड ⇒ कवि = हरिवंश राय बच्चन
कविता = 2. एक गीत

एक गीत
Ch = ⇒ दिन जल्दी - जल्दी ढलता है !

Q.7 सप्रसंग व्याख्या

प्रश्न - 7 व्याख्या ⇒ दिन जल्दी - जल्दी ढलता है,
हो जाय न पथ में रात कहीं,
यह सोच थका दिन का पंथी
भी जल्दी - जल्दी चलता है।
मुझसे मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊँ किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को,
भरता उर में विह्वलता है।
दिन जल्दी - जल्दी ढलता है।

उत्तर = प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गीत हमारी पाठ्य पुस्तक "आरोह भाग - 2" में संकलित "निशा - निमंत्रण" नामक कविता से अवतरित की गयी है। इस कविता के रचयिता सुप्रसिद्ध कवि "हरिवंश राय बच्चन" जी है।

प्रस्तुत काव्यांश में कवि समय के बीतने जाने के एहसास के साथ लक्ष्य

तक पहुँचने के लिए कुछ कर गुजरने के विषय में बताते हुए कह रहे हैं कि दिन जल्दी-जल्दी बीतते हैं अर्थात समय बहुत जल्दी बीत जाता है। वक्त कभी नहीं रुकता। बीता समय कभी वापिस नहीं आता। हे राहगीर! तेरे मार्ग में कहीं रात न हो जाय। मेरा लक्ष्य, मंजिल भी अधिक दूर नहीं है यह विचार करके दिन में राह पर चलने वाला मुसाफिर भी जल्दी-जल्दी मार्ग पर आगे बढ़ता है।

चिड़िया भी यह जानती है कि दिन जल्दी-जल्दी ढल रहा है, यह सोचकर चिड़िया के पंखों में भी गति उत्पन्न हो जाती है। यह स्मरण होते ही चिड़िया के बच्चे घोंसले में उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, यह ध्यान आते ही उसके पंखों में उत्साह भर जाता है। कवि कहता है कि पता नहीं मुझसे मिलने के लिए कौन व्याकुल है, कौन मुझसे मिलने की आशा लगाए हुए है। मैं किसके लिए अपनी गति को तेज करूँ? मनुष्य के मन में उठा यह प्रश्न उसके पैरों को कमजोर बना देता है और हृदय में व्याकुलता भर देता है। जो व्यक्ति मंजिल को प्राप्त करने की इच्छा अपने मन में नहीं रखते, वे अपनी गति को तेज नहीं कर सकते। अर्थात व्यक्ति का जीवन दिन के समान धीरे-धीरे मृत्यु के पथ की ओर अग्रसर हो रहा है।

Q. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

Q.1 राहगीर क्या सोचकर पथ पर जल्दी-जल्दी चलता है?

Ans पथ पर कहीं रात न हो जाये।

Q.2 चिड़िया के परों (पंखों) में चंचलता किस बात से आ जाती है?

Ans चिड़िया के बच्चे घोंसले में उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

Q.3) कौन से प्रश्न पथिक के हृदय में विह्वलता (व्याकुलता) लाते हैं?

Ans. मुझसे मिलने को कौन व्याकुल है? मैं किसके हित में चंचल बनूँ? ये प्रश्न उसे बेचैन बना देते हैं।

Q.4) "दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।" इस पंक्ति में कौन-सा भाव निहित है, इसके माध्यम से कवि क्या बताना चाहता है?

Ans इस पंक्ति में दिन जल्दी-जल्दी समाप्त हो रहा है यह भाव निहित है। व्यक्ति का जीवन दिन के समान धीरे-धीरे मृत्यु के पथ की ओर अग्रसर हो रहा है।

Scanned with CamScanner